ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* September- 2020
Innovation The Research Concept

आत्म तत्व

Aatm Tatva

Paper Submission: 15/09/2020, Date of Acceptance: 26/09/2020, Date of Publication: 27/09/2020

नसीम फातिमा
पूर्व प्रवक्ता,
दर्शन शास्त्र विभाग,
हनमंतु महाविद्यालय लाहुरपुर,
हनमानु गंज, इलाहाबाद, उतर प्रदेश, भारत

सारांश

भारत वर्ष में धर्म का विशेष महत्व प्रारम्भ से ही रहा है। यहां पर विभिन्न प्रकार की संस्कृतियां तथा धर्मो का समन्वय देखने को मिलता है परन्तु यहां पर धार्मिक विभिन्नता के साथ–साथ अनभिज्ञता भी देखने को मिलती है। सभी धर्म आदरणीय है तथा श्रुतियों के आधार पर होने के कारण यह सत्य भी है। क्योंकि श्रुतियां ईश्वरीय वाणी होती है जो कभी असत्य नहीं होती। आज जितनी उथल–पुथल, भेदभाव– असवेंदनशीलता धर्म के नाम पर हो रही उतनी किसी और विषय पर नहीं। इन सभी विवादो ने धर्म के वास्तविक स्वरूप को बिगाड़ के रख दिया है, जिसके कारण आज हम नैतिकता, अपनी संस्कृति, संस्कारो और उददेश्य, कर्तव्य जो हमारी श्रुतियों, धार्मिक ग्रन्थो जैसे– वेद, गीता, कलाम–पाक आदि ग्रन्थो में बताये गये है से दूर हो गये है। धर्म के वास्तविक स्वरूप तथा उसके उददेश्य को सही अर्थो में बताने का हमने प्रयास किया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम श्रुतियों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करे जिससे न केवल हमारा अपितु पूरा ब्रम्हाण का उद्धार हो सकें और हमारे उददेश्य पूरे हो सकें। आज जो भी उथल–पुथल, चिंताये हमारे जीवन में है उसका यहीं कारण है कि हम ईश्वरीय आदेश की अवहेलना कर रहे हैं। इसलिये आज इस प्रकार के उद्देश्य की उन लोगों को बड़ी आवश्यकता है जो अपनी राष्ट्र की स्वतन्त्रता का प्रयोग आध्यामिकता से अन्धे एक 'तिमिराछन्न' संसार की रचना में कर रहे है जिसमें घृणा लोभ का नग्न नृत्य हो रहा है, अपने स्वार्थ के लिये छल, झूठा प्रचार एवं आत्मा को आवरण के पिजरें में बन्दी बना रखा है।

Religion has been of special importance in India since the beginning. Here, a variety of cultures and religions are seen to be coordinated, but along with religious diversity, ignorance is also seen here. All religion is respectable and it is also true due to being based on Shruti. Because Shruti is a divine voice which is never untrue. Today, there is not as much turmoil, discrimination and insensitivity as in the name of religion. All these controversies have spoiled the true nature of religion, due to which today we have morality, our culture, sanskaras and objectives, duties which are told in our scriptures, religious texts such as Vedas, Gita, Kalam-Pak etc. Have been away from We have tried to explain the true nature of religion and its purpose in the true sense. Today it is necessary that we should live our life according to the Shrutis so that not only ours but the whole Brahman can be saved and our objectives can be fulfilled. Whatever turmoil, worries are in our life today, it is for this reason that we are ignoring the divine order. That is why today there is a great need for such people who are using the freedom of their nation in the creation of a 'dark-skinned' world blinded by spirituality in which naked dance of hate greed is being done, deceit for their selfishness, False propaganda and the soul is kept captive in the casing of the cover.

मुख्य शब्द : दार्शनिक, सर्वांगीण, ब्रह्म तत्व, भौतिकवाद, श्रुति, वेद, कलाम-पाक।
Philosophical, all-round, Brahman element, materialism, Shruti, Veda, Kalam.pak.

प्रस्तावना

प्रत्येक दार्शनिक चिन्तन अपने भौगोलिक परिवेश, देश, काल, परिस्थिति जन्य आवश्यकताओं की उपज होती है। भारतीय विचारधारा में भौतिकवादी एवं अध्यात्मवादी, अवधारणाओं में अदभुत समन्वय दिखाई देता है।

भारतीय दर्शन में जैन, बौद्ध और चार्वाक् को नास्तिक दर्शन कहा जाता है यदि इन दर्शनों का बहुत गम्भीरता से अध्ययन किया जाये तो इसमें भी चार्वाक को छोड़कर वेदो की झलक पायी जाती है।

जैन दर्शन का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि यह पूरा का पूरा अहिंसा पर निर्भर करता है और जीवों का हित चाहता है, इससे यह ज्ञात होता है कि यह भी वैदिक दर्शन की झलक दिखाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

धर्म का हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्व है, परन्तु हम धर्म की वास्तविक स्थिति को नही समझते। प्रत्येक ईश्वरीय धर्म श्रुतियों पर आधारित है। इसमें सबसे प्राचीन वैदिक धर्म है। जितनी भी श्रुतियॉ हैं हमें उनके उद्देश्य को प्राप्त करना चाहिये और जिसके माध्यम से हम 'आत्म तत्व' को प्राप्त कर सकते हैं। 'आत्म तत्व' ज्ञान को प्राप्त कर सभी प्रकार के सुख शांन्ति, वैश्विक एकता एवं समृद्धि को प्राप्त करना इस लेख का उद्देश्य है।

विषय विस्तार

बौद्ध दर्शन की बात करें तो इसका मुख्य उद्देश्य दुख की निवृत्ति है। लेकिन समय एवं परिस्थिति ऐसी रही कि महात्मा बुद्ध धुमाकर वेदो पर ही लाये। महात्मा बुद्ध के अनुसार – मैं ऐसे ईश्वर आत्मा और वेदो को नहीं मानता जिनसे दुख उत्पन्न हो।

यहॉ पर ऐसे शब्दों का निशेध नहीं है अपितु कहने का तात्पर्य वहीं है जो वेदो तथा गीता में कहा गया है उनका कहने का आशय मात्र कर्म करने में ही है। ऐसा कर्म जिससे दुख उत्पन्न ही न हो या दुख का निवारण हो जाये। उन्होने समाधान पर अत्यधिक जोर दिया आडम्बर पर नहीं इसलिये उन्होने चार आर्य सत्य को स्थापित किया।

चार्वाक दर्शन – को भूत और चैतन्यवाद कहते हैं, यह केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को मानते हैं तथा भौतिक सुख प्राप्त करना इनका मुख्य उद्देश्य है। इसमें ऋग्वेद के प्रमाण दिये हैं। वेदो में भी कहा गया है कि शरीर को सुखी रखो क्योंकि सामान्य व्यक्ति भौतिक सुख–साधनों के पीछे अति षीध्र भागता है और आज का हर व्यक्ति भौतिक सुख को प्राप्त नहीं कर पा रहा है इसलिये नये–नये अविष्कार हो रहे हैं।

वेदो में जो बात कही गयी है वही बाते हर दर्शन और पंथ में कही गयी है। विष्व के किसी भी दार्शनिक की बात हो वह इसी विष्व के अन्दर जो धारण और विचार व्याप्त है वही बात कहता है और वह विचार पूर्व वेदों में व्याप्त है तथा वैदिक एवं इस्लामित ज्ञात से आच्छादित न हो तो जो दर्शन और ज्ञान दिया जाता है तो वह इस संसार में दृश्टिगोचर ही न हो, कोई भी वैज्ञानिक व दार्शनिक वेदों, इस्लाम के बाहर की बात नहीं कर सकता और न ही खोज सकता है।

जैसे– जैन दर्शन में स्यादवाद के विसाय में हाथी के दृष्टांत के द्वारा समझाया गया कि अन्धों ने हाथी की जानकारी करने के लिये हाथी को छुआ। किसी ने हाथी के कान छुये, किसी ने सूड, किसी ने पैर, किसी ने पूछ और किसी ने पेट छुआ। जिसके हाथ जो आया उसने उसी आधार पर उसकी कल्पना कर ली। जिसने जो छुआ उसने सब उतना ही हाथी को समझा इसलिये उनका हाथी के लिये एकांगी ज्ञान रहा।

ठीक इसी प्रकार का रूपक विष्व के सभी पंथो का रहा, सभी ने उन्नति और विकास के बात कही है चाहे वह भारतीय दर्शन के नास्तिक धर्म ही क्यों न रहे हो उन्होने भी सामाजिक सुदृढ़ता, शिवत्व एवं शान्ति की बात कही है। लेकिन इन पंथो के अनुयायियों ने इसी एकांगीता में अति कर दी इसी कारण अलगाव व बिखराव दिखता है।

जहॉ अति सर्वाधिक पायी जाती है वहीं पर अज्ञान और अहंकार बहुत अधिक समाया हुआ होता है।

यह दशा विश्व के अनेक समुदायां एवं पंथो की रही है उन्होने एक–एक भाग का मात्र वर्णन किया है इसलिये वे एकांगी ही रह गये। विचार और कर्म सभी पंथो का एक है पूरा का पूरा इस्लाम धर्म श्रुतियों पर आश्रित है और वैदिक भी श्रुतियों पर आश्रित है वेद और कलाम–पाक कल्प से पूर्व विद्यमान हैं इसलिये सबसे प्राचीनतम और प्रारम्भिक धर्म वैदिक सनातन या इस्लाम ही है। दोनो का निरीक्षण कर लें प्रत्येक बात एक दूसरे की पूरक मिलेगी।

ओशो ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'ओषो परमानन्द' के सूत्र में लिखा है कि आज हमारे अन्दर श्रद्धा की भावना की कमी आ रही है। हम किसी अन्य की बात को इसलिये नहीं सुनते क्योंकि हमारे मस्तिष्क में गणितिय घट–जोड़ अधिक हो गया है। क्योंकि आज की शिक्षा ही इस प्रकार की दी जा रही है जिसमें मात्र स्वार्थ ही छिपा है जिसमें न तो संस्कार है, न श्रद्धा है न बलिदान है और न ही मानवता।

आधुनिक दर्शन जगत के जनक रेने डेकार्ट के अनुसार – हमारे पूर्वजो की ऐसी परम्परायें होती हैं कि हमारा मस्तिष्क उसी में उलक्ष जाता है और उसके परे हम नहीं सोच पाते। यही बात उपनिशदों में भी कही गई है – उठो, जागो और पाओ।

हम चाहें जिस परम्परा में रहे हों लेकिन चेतनता बहुत आवश्यक है। चेतना ही मनुष्य को जागृत करती है। जब चेतना जागृत होती है, तो मनुश्य विचार करता हुआ सत्य तक पहुॅचता है।

सत्य शब्द 'सत्+व्यत्' धातुओं से मिलकर बना है।

सत् का अर्थ है – यह

व्यत् का अर्थ है – वह

मनुष्यों को यह और वह दोनो का ज्ञान करना चाहिये।

यह का अर्थ– इस शरीर को जानो अर्थात् इस सांसारिक व्यवहार का भी ज्ञान करना चाहिये। भौतिक सुख, साधनों को पाने में भी आगे बढ़ना चाहिये।

वह का अर्थ – वह ज्ञान जिसके द्वारा हमें सभी प्रकार का सुख प्राप्त हुआ है और जो निरंतर दे रहा है तथा जिसके द्वारा यह शरीर और सांसारिक व्यवहार के कार्य गतिमान हैं, हर जगह यह गतिमानता विद्यमान है।

जहॉ शान्ति और सब प्रकार की एकता विद्यमान है वह तत्व 'आत्म–तत्व' है।

जब मानव इस अमृत मय 'तत्व' को प्राप्त कर लेता है तब वह ब्रह्मतत्व को प्राप्त कर लेता है जहॉ पर

सभी प्राणी मात्र का कल्याण निहित है। जहॉ पर सदैव शान्ति विद्यमान रहती है। इसलिये तू इस लोक को भी जान और परलोक को जान तभी तू इस समग्र सत्य को प्राप्त कर पायेगा। तभी ब्रह्मतत्व का ज्ञान हो पायेगा और तू मानव बन पायेगा।

आज आवश्यकता इस बात की है आने वाली पीढ़ी में मानवतावादी धर्म की शिक्षा का प्रचार होना चाहिये यह मानवीय धर्म सर्वोपरि है।

आज का मूल आधार शिक्षा का बिगड़ना है आगे चल यही एकांगी हो जाता है और इसी एकांगिता को प्राप्त करने में अति करते हैं। तभी नित्य नई–नई परेशानियॉ सामने आती हैं।

शुभ संसकारो और शुभ–विचारों का आदि स्त्रोत वेद और कलाम–पाक हैं जो इस सृष्टि के आदि से विद्यमान हैं और जो सभी पंथो का मूल आधार है। इसलिये संर्वागीणता को अपनाऐं और संर्वागीणता व्याप्त करें, वैदिक और इस्लामिक धर्म, पर चलने वाला मनुष्य कभी भी एंकागी नहीं हो सकता है। वह पूर्ण रूप से सर्वागीण होता है सबका भला चाहता है।

महर्शि दयानन्द सरस्वती जी आर्य समाज के नवें नियम में कहते हैं कि –

''प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिये अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये''

जो व्यक्ति संस्कारवान, सभ्य व सुशिक्षित होता है वह कभी भी अन्याय और अधर्म को होते देख नही सकता है। अधर्म को हटाने व न्याय को व्याप्त करने के लिये उसकी आत्मा व्याकुल हो उठती है।

तभी डॉ0 सर मोहम्मद इकबाल के अनुसार –

''ओकाबी रूह जब बेदार होती है जवानों में
नज़र आती है उनको अपनी मंजिल आसमानों में''

धर्म का हमारे जीवन में इतना अधिक महत्व है कि यदि हमारी संतान भी ईश्वरीय आदेश का उल्लंघन करे तो वह संतान कहलाने योग्य नहीं है।

ठसी प्रकार गीता में भी श्रीकृष्ण जी ने भक्तियोग, कर्मयोग और ज्ञान–योग के समन्वय को ही सारी मानसिक, दार्शनिक, धर्मिक समस्याओं के समाधान का एक मात्र उपाय बताया है।

किसी भी ईश्वरीय ग्रन्थ पर आक्षेप लगाना अज्ञानता का काम है ऐसे व्यक्ति में बुद्धि और ज्ञान की अपरिपक्ता दिखाई पड़ती है। ईश्वर–सम्पूर्ण भाव एवं बौद्धिकतावादी मनुष्य कभी भी ईश्वरीय आदेशों पर उंगली नहीं उठाता है।

ईश्वरी आदेश, ज्ञान, शुभ तथा परम सुख एवं ज्ञान पर्याय होता है। कलाम–पाक में इस्लाम के अर्थ की विवेचना इस प्रकार की गई है कि प्रत्येक मनुश्य जीव–धारी एवं ब्रह्माण्ड ईश्वर आदेशानुसार सुरक्षित हो और सुरक्षित रास्ते पर चलता हुआ अल्लाह को प्राप्त करे। कलाम–पाक में प्रार्थना का तरीका भी इस सुन्दर ढंग से बताया गया है कि –

''ऐ अल्लाह हमें सीधे रास्ते पर चला, ऐसे रास्ते पर जिसपर आपका ईमान हुआ है न कि ऐसे रास्ते पर जिसपर आपका आजाब हुआ''।

कहने का तात्पर्य यह है कि – संसार के जितने भी पवित्र धार्मिक ग्रन्थ है वे सभी सर्वप्रथम एक ही संदेष देते हैं कि पहले अपने मन को शुद्ध एवं पवित्र करो, बुद्धि को एकाग्रचित करके एवं शान्त भाव होकर प्रत्येक श्रुति का अध्ययन करो फिर इसको अपने कर्म में लाओ तभी प्राप्त करोगे, क्योंकि ईश्वरकी वाणी कभी असत्य नहीं होती। परमात्मा ने श्रुतियों के माध्यम से यह कह दिया है कि 'सोचो, करो और पाओ' लेकिन पहले कर्म करने की षर्त पूरा करो बहुदा लोक पद्धति की शर्त पूरा नहीं करते और कर्म करने लगते हैं जिससे उनको इच्छित फल की प्राप्ति नहीं हो पाती और वे ईश्वरीय आदेशों में रूचि खो बैठते हैं। जब लोगो की मानसिकता श्रुतियों के विपरीत हो जाती है तो लोगो की मानसिकता को श्रुतियों पर लाने के लिये किसी महापुरूष का जन्म होता है जिसको हम पैगंम्बर कहते हैं।

पुराणों के प्रकाण्ड पण्डितों के विचारानुकूल इस्लाम के पैगम्बर 'मोहम्मद सल्ल0' का वर्णन भगवत् पुराण में निम्न श्लोक उनके चरित्र एवं पवित्र निशानियों के आधार पर दिया गया है।

सर्वभूतसुहच्छान्तो ज्ञानविज्ञान निष्चयः ।
प्यन् मदात्मक विष्व न विपद्येत वै पुनः ।।

अर्थात् –

जिसने श्रुतियों के तात्पर्य का यथार्थ ज्ञान ही नहीं प्राप्त कर लिये बल्कि उनका साक्षात्कार भी कर लिया है और जो अटल निश्चय से सम्पन्न हो गया वह समस्त प्राणियों का हितैशी, सुहृद होगा तथा उसकी वृत्तियॉ सर्वथा शान्त रहती हैं वह समस्त प्रतिमान विश्व को मेरा ही स्वरूप आत्म स्वरूप देखता है इसलिये उसे कभी जन्म मृत्यु के चक्र में नहीं पड़ना पडता है।

निष्कर्ष

आज के युग में वेदों, उपनिषदों, गीता, कलाम–पाक और हदीस शरीफ के एकीकृत दर्शन की परमावष्यकता है, क्योंकि यह मनुष्यों के बीच तथा राष्ट्रों के बीच परस्पर प्रेम की भावना जागृत कर सकता है। हमें हमारे वास्तविक उद्देश्य जैसा कि पवित्र श्रुतियों के माध्यम से बताया गया है, उस पर चलकर 'आत्म तत्व' को प्राप्त कर जीवन में पूर्णता की प्राप्ति हो सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *मनुस्मृति प0 ज्वाला प्रसाद चतुर्वेदी*
2. *सत्यार्थप्रकाश स्वामी दयानन्द सरस्वती*
3. *निरूक्त*
4. *वैशेषिक दर्शन 7–2–26*
5. *कलाम–पाक–पारा–30 अशरफ अली थानवी*
6. *गीता रहस्य बाल गंगाधर तिलक*
7. *भारतीय दर्शन श्री सतीश चन्द्र चटर्जी*
8. *अगर अब भी न जागे डॉ0 तारिक अब्दुल्ला*
9. *हदीस शरीफ बुखारी*
10. *शंकर का ब्रह्मवाद डॉ0 आर0एस0 नौलखा*